31-32 ISSN 2455-5169
peer-reviewed
त्रैमासिक ई-पत्रिका

परिवर्तन

संयुक्तांक

परिवर्तन

साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

सम्पादक
डॉ. महेश सिंह

अंक 31-32, जुलाई-दिसंबर 2023 (संयुक्तांक)

अनुक्रमणिका

संपादकीय

सावधान ! यह त्रेतायुग है — डॉ. महेश सिंह / 1

आलेख/शोध-आलेख

लोक साहित्य की प्रभावशीलता — डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय / 3
महात्मा कबीर : गृहस्थ फक़ीर — इंद्र कुमार दीक्षित /8
बुंदेली लोक साहित्य में राम और सीता के अलौकिक प्रेम का निरूपण — डॉ. गजेन्द्र भारद्वाज / 11
'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' : परम्परा और आधुनिकता का समन्वय — मनोज शर्मा /19
पुत्रिकामेष्टि : उत्तर आधुनिक संदर्भों की अभिनव व्याख्या — डॉ. अमरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव / 23
गजानन माधव मुक्तिबोध का आलोचनात्मक व्यक्तित्व और उनकी दृष्टि — अभिनव सिंह / 26
अमानवीयता और असभ्यता के प्रतिरोध से जन्मीं हैं, मंगलेश डबराल की कविताएँ — डॉ. पवन कुमार रावत / 32
जनकवि नागार्जुन के काव्य में चित्रित व्यंग्य एवं जन पीड़ा के प्रति संवेदना का यथार्थ — कौशल कुमार पटेल / 38
अभिमन्यु अनत का पद्य साहित्य एवं युगीन परिदृश्य — डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता / 43
मृत्यु के विषाद में भी जीवन का उल्लास देखने वाला कवि-चन्द्रकुँवर बर्त्वाल — हेमंत चौकियाल / 51
राष्ट्रवाद के आइने में प्रेमचंद — राजपाल / 59
'अमृतसर आ गया है' कहानी में साम्प्रदायिकता — किशन लाल कुम्हार / 63
आदिवासी केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में स्त्री की दशा व दिशा — डॉ. अमित कुमार साह / 68
समकालीनता के परिप्रेक्ष्य में तेलुगु स्त्री-लेखन — डॉ. स्नेहलता / 75
सामाजिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में गिरिराज शरण अग्रवाल के व्यंग्य-साहित्य का अध्ययन — अंचल यादव / 78
दयाप्रकाश सिन्हा के नाटकों में सामाजिक दृष्टि — मुन्ना कुमार / 83
अध्ययन-अध्यापन में आधुनिक तकनीक का प्रयोग : एक विश्लेषण — डॉ. रविकांत जाटव / 88
इक्कीसवीं सदी के भारत की नींव राष्ट्रीय शिक्षा नीति — वैशाली एवं डॉ. प्रिया शर्मा / 91

सिनेमा

हिंदी सिनेमा में आदिवासी संस्कृति और समाज का चित्रण — डॉ. महेश सिंह / 95

कहानियाँ

पानी की बेड़ियों में जकड़ा गाँव — संदीप शर्मा / 100
बेदखल — श्यामल बिहारी महतो / 105
एक भूल — सुनीता मिश्रा / 116
बदनुमा दाग — सन्दीप तोमर / 119

नाटक/एकांकी

भारत का अस्तित्व — मनोज कुमार शर्मा / 125

कविताएँ

केशव शरण की कविताएँ / 131
विक्रांत कुमार की कविताएँ / 134
अशोक 'अंजुम' की ग़ज़लें / 135
तेज प्रताप टंडन 'तेज' की गजलें / 137

पुस्तक समीक्षा

संभावनाओं का वितान : सावन सुआ उपास — अमित कुमार / 139
संस्कृतियों की अन्तर्भुक्ति पर शोधपरक उपन्यास-रिसर्च इन तप्पाडोमागढ़ — उद्धव मिश्र / 144
सात समुंदर पार से तोतों के गणतांत्रिक देश की पड़ताल — दिनेश कुमार माली / 148
मानवीय संवेदनाओं के विविध रंगों से रूबरू करवाती लघुकथाएँ — दीपक गिरकर / 156

ISSN 2455-5169
परिवर्तन

इक्कीसवीं सदी के भारत की नींव राष्ट्रीय शिक्षा नीति

वैशाली एवं डॉ. प्रिया शर्मा

सारांश

किसी भी राष्ट्र की उन्नति का मुख्य आधार उस राष्ट्र की शिक्षा नीति होती है। भारत में प्राचीनकाल से उच्चस्तरीय शिक्षा के लिए प्रतिष्ठित संस्थाएँ जैसे नालंदा, तक्षशिला विश्वविद्यालय थे जिसमें विदेशों से अध्ययन हेतू विद्यार्थी आते थे। प्राचीनकाल में भारत को विश्व गुरु के रूप में जाना जाता था क्योंकि भारत की शिक्षा पद्धति में गुरुकुल व्यवस्था थी जिसमें विद्यार्थियों को बाल्यकाल में ही शिक्षा ग्रहण के लिए भेज दिया जाता था। आधुनिक युग में भारत की शिक्षा व्यवस्था को शिक्षा नीतियाँ लागू किया गया वर्ष 1968, 1986 एवं 2020 में। वर्तमान समय में इक्कीसवीं सदी की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में लागू की गई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की तीसरी शिक्षा नीति 34 वर्षों बाद आई है। वर्तमान समय में सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक पूर्व इसरो प्रमुख पदम विभूषण डॉ. के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति का गठन जून 2017 में किया गया तथा मई, 2019 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा केबिनेट को प्रस्तुत किया गया। 29 जुलाई 2020 को केन्द्रीय मंत्रीमण्डल द्वारा अनुमोदित किया गया। वर्तमान समय में केन्द्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पूरी तरह लागू करने का लक्ष्य वर्ष 2040 तक रखा गया है। नई शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिक तकनीक को बढ़ावा, सौंदर्य बोध, डिजिटल साक्षरता, चेता का विकास, भारतय भाषाओं का महत्व, भारतीय परंपरा, पुनर्स्थापन प्रसार एवं मूल्यांकन पर जोर देती है। आत्मनिर्भर और गौरवशाली भारत के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

मूल शब्द:- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, राष्ट्र उन्नति, इक्कीसवीं सदी, डिजिटल युग, शिक्षा, भारतीय परंपरा।*

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी देश की मूलभूत आवश्यकता होती है। शिक्षा की प्रक्रिया सम्भवतः उतनी ही पुरानी है जितना स्वयं मानव जीवन का अस्तित्व। जीवन में शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए वर्तमान सरकार ने इक्कीसवीं सदी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को नए बदलावों के साथ जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति नयें दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। यह नीति भारत की परंपरा और उसके सांस्कृतिक मूल्यों को बरकरार रखते हुए इक्कीसवीं सदी की शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्य, जिसके अंतर्गत शिक्षा व्यवस्था उसके नियमों का वर्णन सहित सभी पक्षों के सुधार और पुनर्गठन का प्रस्ताव रखता है। यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से ना केवल साक्षरता, उच्च स्तर की तार्किक और समस्या विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक समाधान संबंधित संज्ञानात्मक क्षमताओं का सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना चाहिए। 5+3+3+4 की अवधारणा, भाषाई विविधता (त्रिभाषा फॉर्मूले) को बढ़ावा और संरक्षण जैसे मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस शिक्षा नीति में छात्रों की रचनात्मक सोच, तार्किक निर्णय व नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करने पर विशेष बल देती है। शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार होता है जिससे आप दुनिया को बदल सकते हो। इसलिए समय के साथ-साथ नई नीतियों को लागू करना भी आवश्यक हो जाता है। यह इक्कीसवीं सदी की पहली शिक्षा नीति हैं, जिसका लक्ष्य राष्ट्र के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकता को पूर्ण करना है।

एक नई संरचना (5+3+3+4) नई शिक्षा नीति 2020 में 10+2 के ढाँचे की जगह 5+3+3+4 नई पाठ्यक्रम की संरचना को लागू किया जाएगा जो कि 3-8, 8-11, 11-14, 14-18 साल के बच्चों के लिए हैं। इसमें अब तक दूर रखे गए 3-6 साल के बच्चों को स्कूली पाठ्यक्रम के तहत लाने का प्रावधान है। जिसे विश्व स्तर पर बच्चे के मानसिक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण चरण के रूप में मान्यता दी गई है। नई शिक्षा प्रणाली में प्री स्कूलिंग के साथ 12 साल की स्कूली शिक्षा और तीन साल की आँगनवाड़ी होगी। इसके तहत छात्रों की शुरुआती स्टेज की पढ़ाई के लिए तीन साल की प्री-प्राइमरी और पहली तथा दूसरी कक्षा को रखा गया है।